फरीदाबाद

मजदूर समाचार

मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान–प्रदान के जरियों में एक जरिया

Published

Reflections on Marx's Critique of Political Economy

Reprinted

a ballad against work

The books are free.

नई सीरीज नम्बर 117 मार्च 1998

लहरों वाले खड़े किनारे

एक बुजुर्ग साथी बीड़ी का बन्डल खरीद कर लाये। बैठते ही पान वाले से हुई नौंक-झौंक की चर्चा छेड़ते हुये कहा कि उससे तय करके आया हूँ कि बीड़ी नकली हुई तो वापस कर दूँगा।

सामान और सुविधा के लिये समाज में रुपये-पैसे के जरिये होती अदला-बदली पर बातचीत होने लगी। इस सिलसिले में एक अजीब लेन-देन का किस्सा उभरा। बुजुर्ग साथी एक ऐसे उलझे रिश्ते में फँसे हैं जिसके ताने-बाने कुछ इस प्रकार के हैं :

1. बुजुर्ग साथी 25 साल से जहाँ काम कर रहे थे उस फैक्ट्री में 18 महीनों से तालाबन्दी होने के कारण वे एक अन्य फैक्ट्री में ठेकेदार के मजदूर के तौर पर रोज 12 घन्टों की ड्युटी करते हैं। हर महीने मिलते 1800 रुपयों में से वे नियमित 25 रुपये तालाबन्द फैक्ट्री के यूनियन लीडरों को देते हैं। सम्भाल कर उन्होंने चन्दे की रसीदें अपने पास रखी हैं। बुजुर्ग के जिन सहकर्मियों को नौकरी नहीं मिली उनमें से कोई रिक्शा चला रहे हैं, कोई सब्जी की रेहड़ी लगा रहे हैं, कोई पान के खोखे पर बैठे हैं पर एक काम सब करते हैं – हर महीने बुजुर्ग साथी की ही तरह 25 रुपये चन्दा देते हैं।

2. जो पैसे दिये जाते हैं उनका हिसाब नहीं माँगा जाता ; आधे मन से माँगा जाता है ; डरते-झिझकते माँगा जाता है ; इस तरह माँगते हैं जैसे अपराध कर रहे हों ; दुश्मनी मोल लेने जैसा लगता है। हिसाब की जाँच-परख तो किसी अन्य दुनियाँ की बात लगती है।

3. तीन हजार मजदूरों ने आरम्भ में सौ-सौ रुपये दिये। फिर किसी ने 50 तो किसी ने 100 दिये। उसके बाद के 25 महीनों की 25 रुपये की 25 रसीदें बुजुर्ग साथी संजोये बैठे हैं। इन्तजार में बैठे हैं। फिक्र में डूबे बेफिक्री से समय दर समय दे रहे हैं इस तारीख के बाद उस तारीख को।

★ ★ ★ ★

तारीख का इन्तजार, नेगोसियेशन का इन्तजार, एग्रीमेन्ट का इन्तजार, फैसले का इन्तजार, फैसला लागू होने का इन्तजार .... टिका है इन्तजार चन्दे पर। बढाता है चन्दा इन्तजार को। और, चन्दा देते-देते मजदूर जब थक जाते हैं तब 1978 से बन्द भारत कारपेट्स, 1981 से बन्द ऊषा स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल, 1983 से बन्द ईस्ट इंडिया की जूट मिल, 1985 से बन्द डाबड़ीवाला स्टील, 1987 से बन्द मैटल बॉक्स के मजदूरों के हिसाब की ही तरह उनका इन्तजार भी अनन्त में विलीन हो जाता है।

यह है वह माहौल जिसमें हमें चन्दे के जुड़वाँ इन्तजार को समझने की जरूरत है। इस सिलसिले में कुछ अनुभवी मजदूरों के बीच हुई एक चर्चा में यह बातें उभरी :

✱ " चन्दा यह मान कर देते थे कि इसके बदले में सहुलियतें मिलेंगी। तनखा बढेगी और नौकरी सुरक्षित रहेगी। लेकिन पिछले बीस साल में बात कुछ उल्टी ही रही है।"

✱ " 28 साल से तो मैं देख रहा हूँ कि लोग घटते गये हैं और काम बढता गया है।"

✱ " पहले हम चन्दा देते थे पर अब तो मैनेजमेन्ट हमारी तनखा में से चन्दे के पैसे काट लेती है।"

✱ " आश्वासनों के जाल में हम कहीं न कहीं फँस कर चन्दा देते हैं जबकि बाद में हर बार हमने आश्वासनों को थोथा पाया है।"

★ ★ ★ ★

कार्यस्थल पर चार्जशीट, सस्पैन्शन, एडवान्स, गेट पास की दुधारी तलवार की काट करते हुये हम हर रोज प्रोडक्शन व अनुशासन की सत्ता के खिलाफ कोई न कोई कदम उठाते हैं। मिलजुल कर हम सुपरवाइजर के नकेल डालते हैं, लगाम लगाये रखते हैं। यह आम बात है।

किसी भी मजदूर की काम में कोई दिलचस्पी नहीं होती तथा ना ही होनी चाहिये। और, हर मैनेजमेन्ट का काम है मजदूरों से काम करवाना। नियम-कानून की तलवारें मैनेजमेन्टों को कुछ हद तक ही इसमें मदद करती हैं। हम से काम करवाने के लिये हमें बहलाना, पुचकारना, फुसलाना हर मैनेजमेन्ट के लिये जरूरी है। " किस आड़ में कितना दें कि मजदूर राजी हो जायेंगे ?"– यह सवाल हर मैनेजमेन्ट के लिये हर समय अबूझ पहेली रहता है।

और मैनेजमेन्टों की अबूझ पहेली को हल करता है चन्दा।

चन्दा हमें निर्भर बनाता है। खुद सोच-समझ कर कदम उठाने से रोकता है चन्दा। किसी और का मुँह ताको और इन्तजार करो – यह है चन्दे का सार। और मजदूरों का निष्क्रिय होना मैनेजमेन्टों की पौ-बारह होना है।

हमारे वेतन में से मैनेजमेन्टों द्वारा चन्दे के पैसे काट कर एकमुश्त यूनियन लीडरों को देने के बावजूद कार्यस्थल पर हमें निष्क्रिय करने में आंशिक सफलता भी उन्हें बड़ी मुश्किल से मिल पाती है। हम लहरें पैदा करते ही रहते हैं। लेकिन प्रोडक्शन बन्द होने की स्थिति में काम व अनुशासन के हमारे स्वाभाविक विरोध से पैदा होती लहरें नहीं उठ पाती। ऐसे में सोच-समझ कर वे कदम उठाने जरूरी हो जाते हैं जिनसे लहरें पैदा हों और हमें राहत दें।

लहरें हम पैदा करते हैं। लहरें पैदा करने की क्षमता हम में है। किनारे खड़े दर्शकों में हमें बदल कर हमारी बदहाली बढाती चन्दा राजनीति को नकारने मात्र की जरूरत है।

मजदूर समाचार की हम पाँच हजार प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं।
आप भी छोटू गुस्ताख बनिये। अपनी बातें खुल कर कहिये, फ्री. में कहिये।

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद–121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

सैलरी

दर्द अपना कह सकूँ ना, मिल न पाई सैलरी।
क्या करूँ मजबूर हूँ, अब तक मिली ना सैलरी।।

इससे पूछें उससे पूछें, कब मिलेगी सैलरी?
कैशियर नित कह रहे, फलाँ तारीख लेना सैलरी।
7 बीती 12 बीती, मिल सकी ना सैलरी।
उम्मीद में बस जी रहे हैं, कल मिलेगी सैलरी।।

चैन मेरा छिन गया है, मन दुखी ना सैलरी।
घर पहुँचते पूछते सब, मिल गई क्या सैलरी?
कह न पाता जान जाते, मिल न पाई सैलरी।
क्या करूँ मजबूर हूँ, अब तक मिली ना सैलरी।।

नजरें पूछें, फीस देनी बच्चों की, लाये सैलरी?
दूध वाला टोकता है, कब मिलेगी सैलरी?
बिल सभी तैयार,बैठे, फाड़े मूँ, कहाँ सैलरी?
क्या करूँ, मजबूर हूँ, अब तक मिली ना सैलरी।।

मिल सके राशन तभी चुकता करूँ, आये सैलरी।
हर कोई बेताब है, इन्तजार में, कब सैलरी?
बेबसी चिन्ता मिटे और दम मिले जब सैलरी।
क्या करूँ, मजबूर हूँ, अब तक मिली ना सैलरी।।

सैलरी ईमान है सब, धर्म जग का सैलरी।
सैलरी इज्जत जरूरत, वादे खुदा है सैलरी।
सैलरी मन्जिल मेरी 'ओम', साधना कर्म सैलरी।
क्या करूँ लाचार हूँ, अब तक मिली ना सैलरी।।

— ओम प्रकाश 'ओम', फरीदाबाद

ग़ज़ल

फूस की छप्पर घरों की
और बारिश पत्थरों की

जब भी खेले हैं कटे हैं
ये कहानी है परों की

जुगनुओं के पास चाबी
रोशनी के दफ्तरों की

मंच पर तो मसखरे हैं
कौन सुनता शायरों की

ताजपोशी हो रही है
जो झुके हैं उन सरों की

ढूँढियेगा आदमी में
नस्ल जो थी बन्दरों की।

— दिनेश सिन्दल, जोधपुर

रजिस्ट्रेशन ऑफ न्यूज पेपर सेंटर रूल्स 1956 के अनुसार स्वामित्व व अन्य विवरण का ब्यौरा फार्म नं. 4 (रूल नं. 8)

फरीदाबाद मजदूर समाचार

1. प्रकाशन का स्थान — मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, फरीदाबाद—121001
2. प्रकाशन अवधि — मासिक
3. मुद्रक का नाम — शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
4. प्रकाशक का नाम — शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
5. संपादक का नाम — शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार हों। केवल शेर सिंह मैं, शेर सिंह, एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनाँक 1 मार्च 1998 — हस्ताक्षर शेर सिंह प्रकाशक

नरक बना 16/5 और 16/2

समाचार यह है कि मैसर्ज प्रोग्रेसिव प्रिन्ट क्राफ्ट, 16/5 मथुरा रोड़, फरीदाबाद के मजदूरों की तरफ से आप अपने मजदूर समाचार में लिखना। यह फैक्ट्री सरकारी तरीके से 10.5.91 से चालू है मगर यहाँ पर न कोई रजिस्टर है न कोई कानून। यहाँ के वरकर बोलते हैं तो उन्हें जूतों से मार कर रिजाइन लिखवा लेते हैं और भगा देते हैं। लेबर इन्सपैक्टर हर महीने अपना चन्दा ले जाते हैं। इस फैक्ट्री में बीस वरकर कार्य करते हैं और सभी को मार कर, धमका कर निकाला जा रहा है। न किसी की ई. एस.आई. और न कोई छुट्टी यहाँ है। इनकी मशीन की कीमत 6 लाख 50 हजार है मगर कागज 2 लाख के बनते हैं। सरकार को चूना लगाया जा रहा है मगर प्रशासन को कोई ध्यान नहीं — उन्हें अपना चन्दा टाइम पर मिल जाता है।

इस कम्पनी में रिकार्ड नहीं है। जब वरकर बोलते हैं तो उन्हें आफिस बुला कर खाली कागज पर साइन करवा लिये जाते हैं और कहते हैं कि जाओ जहाँ जाना चाहते हो, हमारा कुछ नहीं बिगड़ेगा। प्रशासन ने कभी ये कोशिश नहीं की कि पिछला रिकार्ड माँगें। हमने जब रिश्वत लेते आदमी को देखा तो उसने नाम बताने से इनकार कर दिया। कम्पनी के मालिक सुरेन्द्र कटारिया ने कहा कि मैं रिश्वत दे सकता हूँ मगर तुम्हें कुछ नहीं दूँगा। बोनस की माँग पर कहा कि बोनस तुम्हारा नहीं बनता और उसी दौरान गाल पर तमाचा मार कर चौधरी गिर्राज को नौकरी से निकाल दिया। इससे पहले भी माँग करने पर वरकर के गाल पर तमाचा मार चुके हैं।

14. 2. 98 — प्रोग्रेसिव प्रिन्ट क्राफ्ट के मजदूर

दुर्गा इन्डस्ट्रीज

मैं, हरीचन्द, दुर्गा इन्डस्ट्रीज, वी. एम. पब्लिक स्कूल के पास, जवाहर कालोनी, एन. आई. टी. फरीदाबाद में तीन साल से काम करता हूँ। इस फैक्ट्री में मैं आपरेटर के पद पर कार्यरत था। एक दिन अचानक मेरी तबियत खराब हो गई और मैं फैक्ट्री नहीं गया। दूसरे दिन ड्युटी के लिये गया तो मैनेजर ने गेट बन्द कर दिया। मेरे लाख कहने पर भी उन्होंने मेरी एक नहीं सुनी और बिना कोई नोटिस, बिना तनखा दिये निकाल दिया। आज 6 महीने से ऊपर हो गये हैं पर कानून से भी कोई सहायता नहीं मिली है। मालिक श्री रवि चौपड़ा से मिला तो बोले कि बिना बताये छुट्टी करने की यही सजा है। अभी तक कोई हिसाब-किताब नहीं दिया।

17. 2. 98 — हरीचन्द, दुर्गा इन्डस्ट्रीज का निकाला हुआ मजदूर

आटो लेक लिमिटेड

लिसी नेवल आटो, 19/6 मथुरा रोड़, 4-5 वर्ष आटो लेक, प्लाट नं. 8 सैक्टर—24 में चली। उससे पहले सोहना रोड़ पर प्लाट नं. 257 सैक्टर—24 में 4-5 साल चलती रही। और अब कुछ श्रमिक लिसी नेवल आटो लेक, 19/6 मथुरा रोड़, फरीदाबाद में कार्यरत हैं। लेकिन आज तक कोई भी फैक्ट्री एक्ट सम्बन्धी सुविधा मजदूरों को प्राप्त नहीं है। एक-दो घन्टे का कोई ओवर टाइम नहीं देते और न ही कोई छुट्टी व बोनस देते। हर दो-तीन साल बाद स्थानान्तरित कर देते हैं। फरीदाबाद में इस प्रकार के आटो पार्ट्स बनाने वाली तथा एक्सपोर्ट डिस्पैच से सालाना 40 करोड़ रुपया मुनाफा वाली पहली कम्पनी है। बहुत दिनों से हम देखते आ रहे हैं फिर भी अधिकारीगण सही ढँग से निरीक्षण नहीं करते। रुपयों-पैसों के बल पर आई.एस. ओ. ले लेना, बिजली चोरी, सेल्स टैक्स की चोरी, इन्कम टैक्स चोरी, अवैध रूप से माल का लाना ले जाना, मजदूरों का 5 से 7 वर्षों से शोषण करना, हर वर्ष बाद कम्पनी का नाम बदलना, सैलरी रजिस्टर बदल कर पेमेन्ट देना, कभी बाहर से किसी को ठेकेदार बना कर उसके नाम से पेमेन्ट देना आदि यहाँ चलता है। जब भी हम अपने किसी भी अधिकार की माँग करते हैं तो हमें बताया जाता है कि अपने ठेकेदार से माँगो। हम आशा करते हैं कि अधिकारीगण हमारी समस्याओं की ओर ध्यान देंगे।

12. 2. 98 — आटो लेक के कुछ मजदूर

अच्छे, गहरे, आत्मीय, सुन्दर, सौहार्दपूर्ण, सहयोगी, प्रेम-उल्लास-मस्ती भरे, भेदभावहीन, बिना ऊँच-नीच वाले सामाजिक रिश्ते हम चाहते हैं। हम कल्पना करते हैं, सपने देखते हैं ऐसी दुनियाँ के जिसमें हम सब के बीच उपरोक्त रिश्ते हों। लेकिन ऐसे रिश्ते बनने और बढने में मंडी-मार्केट, रुपये-पैसे, अनुशासन-डिसिप्लिन, शक्ति भक्ति, बल प्रयोग और सीढीनुमा ऊँच-नीच वाली सामाजिक व्यवस्था बाधक है, रुकावट है, रोड़ा है। इन रोड़ों से जूझने के लिये हम कदमों पर विचार करते हैं, कदम उठाते हैं और प्राप्त अनुभवों पर चर्चा करते हैं। यही इस अखबार का दायरा है।

सैलरी

दर्द अपना कह सकूँ ना, मिल न पाई सैलरी।
क्या करूँ मजबूर हूँ, अब तक मिली ना सैलरी।।

इससे पूछें उससे पूछें, कब मिलेगी सैलरी ?
कैशियर नित कह रहे, फलाँ तारीख लेना सैलरी।
7 बीती 12 बीती, मिल सकी ना सैलरी।
उम्मीद में बस जी रहे हैं, कल मिलेगी सैलरी।।

चैन मेरा छिन गया है, मन दुखी ना सैलरी।
घर पहुँचते पूछते सब, मिल गई क्या सैलरी ?
कह न पाता जान जाते, मिल न पाई सैलरी।
क्या करूँ मजबूर हूँ, अब तक मिली ना सैलरी।।

नजरें पूछें, फीस देनी बच्चों की, लाये सैलरी ?
दूध वाला टोकता है, कब मिलेगी सैलरी ?
बिल सभी तैयार,बैठे, फाड़े मूँ, कहाँ सैलरी ?
क्या करूँ, मजबूर हूँ, अब तक मिली ना सैलरी।।

मिल सके राशन तभी चुकता करूँ, आये सैलरी।
हर कोई बेताब है, इन्तजार में, कब सैलरी ?
बेबसी चिन्ता मिटे और दम मिले जब सैलरी।
क्या करूँ, मजबूर हूँ, अब तक मिली ना सैलरी।।

सैलरी ईमान है सब, धर्म जग का सैलरी।
सैलरी इज्जत जरूरत, वादे खुदा है सैलरी।
सैलरी मन्जिल मेरी 'ओम', साधना कर्म सैलरी।
क्या करूँ लाचार हूँ, अब तक मिली ना सैलरी।।

— ओम प्रकाश 'ओम', फरीदाबाद

ग़ज़ल

फूस की छप्पर घरों की
और बारिश पत्थरों की

जब भी खेले हैं कटे हैं
ये कहानी है परों की

जुगनुओं के पास चाबी
रोशनी के दफ्तरों की

मंच पर तो मसखरे हैं
कौन सुनता शायरों की

ताजपोशी हो रही है
जो झुके हैं उन सरों की

ढूँढियेगा आदमी में
नस्ल जो थी बन्दरों की।

— दिनेश सिन्दल, जोधपुर

रजिस्ट्रेशन ऑफ न्यूज पेपर सेंटर रूल्स 1956 के अनुसार स्वामित्व व अन्य विवरण का ब्यौरा फार्म नं. 4 (रूल नं. 8)

फरीदाबाद मजदूर समाचार

1. प्रकाशन का स्थान — मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, फरीदाबाद—121001
2. प्रकाशन अवधि — मासिक
3. मुद्रक का नाम — शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
4. प्रकाशक का नाम — शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
5. संपादक का नाम — शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार हों। केवल शेर सिंह

मैं, शेर सिंह, एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनाँक 1 मार्च 1998 — हस्ताक्षर शेर सिंह प्रकाशक

नरक बना 16/5 और 16/2

समाचार यह है कि मैसर्ज प्रोग्रेसिव प्रिन्ट क्राफ्ट, 16/5 मथुरा रोड़, फरीदाबाद के मजदूरों की तरफ से आप अपने मजदूर समाचार में लिखना। यह फैक्ट्री सरकारी तरीके से 10.5.91 से चालू है मगर यहाँ पर न कोई रजिस्टर है न कोई कानून। यहाँ के वरकर बोलते हैं तो उन्हें जूतों से मार कर रिजाइन लिखवा लेते हैं और भगा देते हैं। लेबर इन्सपैक्टर हर महीने अपना चन्दा ले जाते हैं। इस फैक्ट्री में बीस वरकर कार्य करते हैं और सभी को मार कर, धमका कर निकाला जा रहा है। न किसी की ई. एस.आई. और न कोई छुट्टी यहाँ है। इनकी मशीन की कीमत 6 लाख 50 हजार है मगर कागज 2 लाख के बनते हैं। सरकार को चूना लगाया जा रहा है मगर प्रशासन को कोई ध्यान नहीं — उन्हें अपना चन्दा टाइम पर मिल जाता है।

इस कम्पनी में रिकार्ड नहीं है। जब वरकर बोलते हैं तो उन्हें आफिस बुला कर खाली कागज पर साइन करवा लिये जाते हैं और कहते हैं कि जाओ जहाँ जाना चाहते हो, हमारा कुछ नहीं बिगड़ेगा। प्रशासन ने कभी ये कोशिश नहीं की कि पिछला रिकार्ड माँगें। हमने जब रिश्वत लेते आदमी को देखा तो उसने नाम बताने से इनकार कर दिया। कम्पनी के मालिक सुरेन्द्र कटारिया ने कहा कि मैं रिश्वत दे सकता हूँ मगर तुम्हें कुछ नहीं दूँगा। बोनस की माँग पर कहा कि बोनस तुम्हारा नहीं बनता और उसी दौरान गाल पर तमाचा मार कर चौधरी गिर्राज को नौकरी से निकाल दिया। इससे पहले भी माँग करने पर वरकर के गाल पर तमाचा मार चुके हैं।

14. 2. 98 — प्रोग्रेसिव प्रिन्ट क्राफ्ट के मजदूर

दुर्गा इन्डस्ट्रीज

मैं, हरीचन्द, दुर्गा इन्डस्ट्रीज, वी. एम. पब्लिक स्कूल के पास, जवाहर कालोनी, एन. आई. टी. फरीदाबाद में तीन साल से काम करता हूँ। इस फैक्ट्री में मैं आपरेटर के पद पर कार्यरत था। एक दिन अचानक मेरी तबियत खराब हो गई और मैं फैक्ट्री नहीं गया। दूसरे दिन ड्युटी के लिये गया तो मैनेजर ने गेट बन्द कर दिया। मेरे लाख कहने पर भी उन्होंने मेरी एक नहीं सुनी और बिना कोई नोटिस, बिना तनखा दिये निकाल दिया। आज 6 महीने से ऊपर हो गये हैं पर कानून से भी कोई सहायता नहीं मिली है। मालिक श्री रवि चौपड़ा से मिला तो बोले कि बिना बताये छुट्टी करने की यही सजा है। अभी तक कोई हिसाब-किताब नहीं दिया।

17. 2. 98 — हरीचन्द, दुर्गा इन्डस्ट्रीज का निकाला हुआ मजदूर

आटो लेक लिमिटेड

लिसी नेवल आटो, 19/6 मथुरा रोड़, 4-5 वर्ष आटो लेक, प्लाट नं. 8 सैक्टर—24 में चली। उससे पहले सोहना रोड़ पर प्लाट नं. 257 सैक्टर—24 में 4-5 साल चलती रही। और अब कुछ श्रमिक लिसी नेवल आटो लेक, 19/6 मथुरा रोड़, फरीदाबाद में कार्यरत हैं। लेकिन आज तक कोई भी फैक्ट्री एक्ट सम्बन्धी सुविधा मजदूरों को प्राप्त नहीं है। एक-दो घन्टे का कोई ओवर टाइम नहीं देते और न ही कोई छुट्टी व बोनस देते। हर दो-तीन साल बाद स्थानान्तरित कर देते हैं। फरीदाबाद में इस प्रकार के आटो पार्ट्स बनाने वाली तथा एक्सपोर्ट डिस्पैच से सालाना 40 करोड़ रुपया मुनाफा वाली पहली कम्पनी है। बहुत दिनों से हम देखते आ रहे हैं फिर भी अधिकारीगण सही ढँग से निरीक्षण नहीं करते। रुपयों-पैसों के बल पर आई.एस. ओ. ले लेना, बिजली चोरी, सेल्स टैक्स की चोरी, इन्कम टैक्स चोरी, अवैध रूप से माल का लाना ले जाना, मजदूरों का 5 से 7 वर्षों से शोषण करना, हर वर्ष बाद कम्पनी का नाम बदलना, सैलरी रजिस्टर बदल कर पेमेन्ट देना, कभी बाहर से किसी को ठेकेदार बना कर उसके नाम से पेमेन्ट देना आदि यहाँ चलता है। जब भी हम अपने किसी भी अधिकार की माँग करते हैं तो हमें बताया जाता है कि अपने ठेकेदार से माँगो। हम आशा करते हैं कि अधिकारीगण हमारी समस्याओं की ओर ध्यान देंगे।

12. 2. 98 — आटो लेक के कुछ मजदूर

अच्छे, गहरे, आत्मीय, सुन्दर, सौहार्दपूर्ण, सहयोगी, प्रेम-उल्लास-मस्ती भरे, भेदभावहीन, बिना ऊँच-नीच वाले सामाजिक रिश्ते हम चाहते हैं। हम कल्पना करते हैं, सपने देखते हैं ऐसी दुनियाँ के जिसमें हम सब के बीच उपरोक्त रिश्ते हों। लेकिन ऐसे रिश्ते बनने और बढने में मंडी-मार्केट, रुपये-पैसे, अनुशासन-डिसिप्लिन, शक्ति भक्ति, बल प्रयोग और सीढीनुमा ऊँच-नीच वाली सामाजिक व्यवस्था बाधक है, रुकावट है, रोड़ा है। इन रोड़ों से जूझने के लिये हम कदमों पर विचार करते हैं, कदम उठाते हैं और प्राप्त अनुभवों पर चर्चा करते हैं। यही इस अखबार का दायरा है।

कमला सिनटैक्स

मैसर्स कमला सिनटैक्स लि., प्लाट नं. 10-11, सैक्टर-4, फरीदाबाद के प्रबन्धकों द्वारा मिल के श्रमिकों को काम व वेतन न देकर आठ सौ श्रमिकों को व उनके परिवार वालों को भूखे मारने की साजिश।

दिनांक 7. 2. 98 से मिल के पावर ने मैटेरियल लाना बन्द कर दिया तथा दिनांक 13.2.98 से पावर को जानबूझ कर कटवा दिया और जो लाखों का बना हुआ माल था उसको भी मिल से बाहर निकलवा दिया। उसके बाद प्रबन्धकों ने मिल के 17 श्रमिकों को निलम्बित कर दिया। उद्योग की यूनियन ने प्रबन्धकों से मैटेरियल मंगवा कर उद्योग को चलाने की माँग की है लेकिन प्रबन्धकों ने कोई ध्यान नहीं दिया। प्रबन्धकों की इस प्रकार की श्रम विरोधी नीति की शिकायत श्रीमान श्रमायुक्त महोदय चन्दीगढ व उप श्रमायुक्त तथा श्रम तथा समझौता अधिकारी फरीदाबाद को की। इस शिकायत के बाद श्रम तथा समझौता अधिकारी और एरिया के श्रम निरीक्षक ने मौके पर जा कर मिल का निरीक्षण किया और पाया कि मिल के अन्दर न तो मैटेरियल है और ना ही पावर है और ना ही बना हुआ माल है। इसके बाद श्रम तथा समझौता अधिकारी ने प्रबन्धकों को अपने कार्यालय बुलाया लेकिन प्रबन्धक जानबूझ कर नहीं आये। प्रबन्धकों का इस प्रकार का रवैया गैर जिम्मेदाराना है तथा जानबूझ कर श्रमिकों को परेशान करने की साजिश है। कारण यह है कि प्रबन्धकों ने मिल के श्रमिकों को माह जनवरी का वेतन अभी तक नहीं दिया तथा वर्ष 1996-1997 का बोनस भी अभी तक नहीं दिया जबकि नवम्बर 30 तारीख बोनस देय की कानूनी आखिरी तारीख होती है। यहाँ तक कि मिल के प्रबन्धकों ने कई सालों का भविष्य निधि व ई.एस.आई. के वह पैसे भी जमा नहीं किये जो कि श्रमिकों के वेतन से काटे गये हैं। मिल के श्रमिकों से विदित हुआ है कि प्रबन्धकों ने पाँच माह पूर्व प्लाट न. 103, सैक्टर-24, फरीदाबाद में फोरचून इन्टरनेशनल के नाम से नई मिल खोली है तथा इस मिल में कमला सिनटैक्स लि. का पूरा काम करवाया जाता है।....

24. 2. 98 — कमला सिनटैक्स में एक यूनियन की प्रेस विज्ञप्ति

कमला सिनटैक्स में कार्यरत मजदूरों को कुछ सुझाव

बिना देरी किये कमला सिनटैक्स के मजदूरों को ऐसे कदमों पर विचार करना चाहिये जो आसान हों, कम से कम खतरे लिये हों, कम से कम खर्चीले हों और जल्दी उनको राहत दिलाने की क्षमता लिये हों। इस बारे में हमारे कुछ सुझाव हैं —

★ पाँच-पाँच, सात-सात की टोलियों में दस बजे से पाँच बजे तक डी. एल.सी. और डी.सी. के दफ्तरों के ताँता लगाना। अलग-अलग से लिख कर और जबानी हर टोली अपनी बातें कहे। दिन-भर सौ-डेढ सौ टोलियों को देखते-सुनते साहबों के सिर चकराने लगेंगे। आश्वासन दे कर या दफ्तर में मौजूद नहीं रह कर कभी-कभार वाले जलूस को फेल करने वाला साहबों का हथकन्डा ऐसे में नहीं चल पायेगा। दस दिन लगातार पचास-सौ टोली साहबों के दफ्तर पहुँचेंगी तो उनके कलेजे इतने जलने लगेंगे कि उन्हें अपनी जान बचाने के लिये कमला मैनेजमेन्ट को पकड़ना होगा। और, साहब चाहेंगे तो भी लाठी-गोली नहीं चलवा सकेंगे।

★ गत्तों पर लिख कर अपनी बातें अन्य मजदूरों को बताना। शिफ्टों के समय सुबह और शाम 25 सड़कों पर कमला मजदूरों की टोलियाँ गत्ते ले कर खड़ी होंगी तो पूरे फरीदाबाद में कमला सिनटैक्स मजदूरों की समस्या चर्चा का विषय बन जायेगी। इससे फरीदाबाद-भर की मैनेजमेन्ट को परेशानी होगी। अलग-अलग सड़कों पर खड़े आठ-दस मजदूरों की 25 टोलियाँ नमक-भर खर्च में फरीदाबाद-भर की मैनेजमेन्टों की आँखों में मिर्च की तरह रड़कने लगेंगी और दस दिन भीतर कमला सिनटैक्स मैनेजमेन्ट पर इतना दबाव बनेगा कि वह मजदूरों को राहत देने को मजबूर होगी।

तारीख... आश्वासन... भरोसा... इन्तजार... बरबादी की राह।

मैनेजर-मजदूर वार्ता

एक फैक्ट्री में मैनेजमेन्ट 40 प्रतिशत मजदूरों को नौकरी से निकालने की फिराक में है। वी आर एस (स्वेच्छा से सेवानिवृति) के नाम पर मैनेजमेन्ट दबाव बना कर जबरन् मजदूरों से इस्तीफे लिखवाने के लिये कसरत कर रही है। इस सिलसिले में एग्जीक्युटिव डायरेक्टर ने मैनेजरों की मीटिंगें ली और फिर मैनेजरों ने मजदूरों से वार्ता की।

मैनेजर : "जब कोई जहाज आफत में फँसा होता है तब उसमें से भारी-भरकम सामान समुद्र में फेंक कर उसे बचाने की कोशिश की जाती है। आज कम्पनी संकट में है इसलिये 40 परसैन्ट मजदूरों को नौकरी छोड़ कर बाकी 60 प्रतिशत को बचाना चाहिये।"

मजदूर : "भारी-भरकम तो मैनेजर हैं जो 35-40 हजार रुपये तनखा लेते हैं। इसलिये कम्पनी को बचाने के लिये मैनेजरों को नौकरी से इस्तीफे देने चाहियें। हम मजदूर तो साहब लोगों के सामने बस मच्छर हैं।"

मैनेजर : "हमारी परम्परा आत्म-बलिदान की है। तपस्वी दधीचि ने देवताओं के शस्त्र निर्माण के लिये अपनी हड्डियाँ तक दान में दे दी थी। आप लोगों को तो नौकरी छोड़ने के लिये मुआवजा भी दिया जा रहा है ताकि आपके भाई-बहनों की नौकरियाँ बची रह सकें।"

मजदूर : "बाढ में पूरा गाँव बह जाता है तब हम सब दुखी होते हैं। फैक्ट्री बन्द ही हो जायेगी तो सब इकट्ठे देखेंगे कि क्या करें। अभी तो कम्पनी के पास एक प्लाट पड़ा है जिसे बेच कर वह काम चला सकती है। फैक्ट्री बन्द हो ही गई तो हम कम्पनी की ईंटें बेच कर अपना हिसाब ले लेंगे।"

मंगल....अमंगल

हितकारी पोट्रीज और **हितकारी चाइना** फैक्ट्रियाँ मैनेजमेन्ट द्वारा 2 जनवरी को बन्द करने के हफ्ते-भर में वे सुनसान नजर आने लगी। 1200 मजदूरों का कोई अता-पता नहीं लगने की गुत्थी एक मजदूर ने सुलझाई :

● परसनल मैनेजर ने तीन महिला मजदूरों को साथ ले कर हितकारी चाइना की महिला मजदूरों को घर-घर जा कर कहा कि तुम फैक्ट्री गेट पर मत जाओ, हितकारी चाइना जल्दी ही खुलवा देंगे।

● यूनियन लीडरों ने कुछ संख्या कम होने पर मजदूरों से कहा कि इस तरह संख्या कम होती जायेगी तो हमारी ताकत कमजोर हो जायेगी इसलिये आप सब अपना-अपना काम करो और मंगलवार को गेट पर आया करो। कोर्ट-कचहरी का काम हम देखेंगे और आप लोगों को जानकारी दे दी जायेगी।

इस दोहरे जाल में फँसा कर प्याली के 1200 स्त्री व पुरुष मजदूरों को बिखेर दिया गया। निष्क्रिय करके मजदूरों से इन्तजार करवाया जा रहा है। और, 6 फरवरी को चन्दीगढ में मीटिंग करके लौटे लीडरों ने कहा है कि मैनेजमेन्ट ने 460 मजदूरों को निकालने तथा हितकारी पोट्रीज को पूरी तरह बन्द करने का प्रस्ताव रखा है।

"विशेष परिस्थितियाँ" - यह भाषा सरकारों, मैनेजमेन्टों, लीडरों की है। खास परिस्थितियाँ कुछ नहीं होती। बद से बदतर होती हालात मजदूरों के लिये आम बात है।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73

सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी-546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।